विश्व का एकमात्र ज्वालामुखी जो एक व्यक्ति की निजी सम्पत्ति है। होकाएडो द्वीप में शिकोत्सू-टोया नैशनल पार्क के अंदर, सक्रिय ज्वालामुखी माउन्ट ऊसू से कुछ दूर शोवा-शिनज़ान नाम की चार सौ मीटर ऊँची एक ज्वालामुखी चोटी है। शोवा-शिनज़ान जापान का सबसे युवा पर्वत है। यह 28 दिसम्बर सन् 1943 को तेज कंपन और गर्म लावा के साथ गेहूं के एक खेत में प्रकट हुआ था। जैसे ही पिघला हुआ मैग्मा सतह के ऊपर आया तो उसने आसपास की जमीन को उठा दिया और अगले दो वर्षों तक लावा के गुबंद की ऊंचाई बढ़ती गई तथा 398 मीटर तक पहुंच गयी। द्वितीय विश्व युद्ध में जब जापान, मित्र राष्ट्रों के विरुद्ध लड़ रहा था उस समय शोवा-शिनज़ान फूटा था। अंधविश्वासी लोगों ने इसे एक अपशकुन की तरह लिया। क्योंकि उस समय पूरा देश आपदा के दौर से गुजर रहा था। अधिकारियों ने स्थानीय लोगों से इस ज्वालामुखी पहाड़ की जानकारी गुप्त रखने के लिए अनुरोध किया। लेकिन पास में रहने वाले एक पोस्टमास्टर, मसाओ मिमात्सू ने ज्वालामुखी की प्रगति को देखना और रिकॉर्ड करना शुरु कर दिया। बुनियादी वैज्ञानिक उपकरणों के अभाव में मिमात्सू ने शोवा शिनज़ान के बारे में नोट्स लिए और स्कैच बनाए। इस समय केवल वो ही रिकॉर्ड्स भूवैज्ञानिकों को उपलब्ध हैं। मिमात्सू ने सन् 1948 में, ओस्लो विश्व ज्वालामुखी सम्मेलन में जब अपना डेटा और रेखाचित्र प्रस्तुत किए तो पेशेवर ज्वालामुखीविदों ने उनके काम की प्रशंसा की। उनके दस्तावेजों को "मिमात्सू डायग्राम" नाम दिया गया और इनके लिए उन्हें पहला होकाएडो सांस्कृतिक पुरस्कार मिला। मिमात्सू ने अपनी सारी जमा-पूंजी लगाकर वह सारी ज़मीन खरीद ली जहां ज्वालामुखी प्रकट हुआ था, ताकि वह ज्वालामुखी का अच्छी तरह से अध्ययन कर सके। मिमात्सू अब ज्वालामुखी का मालिक बन गया। जापानी सरकार द्वारा इसे जापान का प्राकृतिक स्मारक घोषित करने के बावजूद आज भी ज्वालामुखी एक निजी संपत्ति है। शोवा-शिनज़ान स्थल के पास ही मिमात्सू के सम्मान में मिमात्सू मसाओ मेमोरियल हॉल की स्थापना की गई, जिसमें सर्वेक्षण उपकरण के माध्यम से पहाड़ की तरफ देखते हुए उनकी एक कांस्य प्रतिमा स्थापित की गयी है।

सीकर में कम मतदान के बावजूद भी भाजपा की जीत के आसार

कांग्रेस कोर वोटर को पसंद नहीं आया इंडिया गठबंधन

सीकर, 27 अप्रैल (निसं)। सीकर संसदीय क्षेत्र में मतदान के बाद आम मतदाता तथा राजनैतिक पार्टियों में परिणाम को लेकर संशय है, क्योंकि मतदान प्रतिशत कम रहा है। इंडिया गठबंधन जातिगत समीकरणों को लेकर जीत के प्रति आश्वस्त है, वहीं भाजपा अपने कोर वोटर्स, मोदी के विकास व गारंटी के साथ अपनी जीत सुनिश्चित मान रही है। इंडिया गठबंधन के प्रभुत्व वाले ग्रामीण क्षेत्र में कम मतदान हुआ है और भाजपा के प्रभुत्व वाले शहरी क्षेत्र में मतदान अधिक हुआ है, इससे भाजपा की जीत पक्की लग रही है। इंडिया गठबंधन के तहत कांग्रेस ने यह सीट माकपा को ही दी है, जहां से अमराराम प्रत्याशी है। भाजपा ने इस सीट से सुमेधानंद सरस्वती को मैदान में उतारा है।

इंडिया गठबंधन, जातीय समीकरण, जैसे एस.सी./एस.टी. व अल्पसंख्यक तथा जाट मतदाताओं को अपने पक्ष में मान कर चल रहा है। लेकिन इससे इंडिया गठबंधन की नैया पार होना मुश्किल दिखाई दे रही है। भाजपा मान रही है कि कम मतदान में भी उसके कोर वोटर्स का मतदान अधिक हुआ है। भाजपा का कहना है कि कांग्रेस का कोर वोटर इंडिया गठबंधन के पक्ष में नहीं था इसके चलते वो घरों से निकला ही नहीं। इसका भी फायदा भाजपा को मिला है।

इंडिया गठबंधन के द्वारा जातीय समीकरण को लेकर माकपा उम्मीदवार अमराराम के पक्ष में लामबंद होना भी भाजपा के मतदाताओं को एकजुट करने में फायदे का सौदा दिखाई दे रहा है। इस क्षेत्र में जाट एवं अल्पसंख्यक मतदाता ही मुखर दिखाई दिये तथा भाजपा के मतदाता ने मौन रहकर आराम से अपना मत डाला। माकपा उम्मीदवार अमराराम के पक्ष के लोग मुखर ज्यादा थे पर वे अपने मतदाता से मतदान अधिक नहीं करा पाए। माकपा का कोर वोटर समझे जाने वाले किसान वर्ग एवं एस.सी./एस.टी., अल्पसंख्यक वर्ग का मतदान गत चुनावों के मुकाबले 10 प्रतिशत से 20 प्रतिशत कम हुआ है। अगर तीनों वर्गों के मतदाताओं के पड़े मतों को संपूर्ण रूप से जोड़ दिया जाए तो भी वो माकपा उम्मीदवार का जीत पाना मुश्किल है। माकपा उम्मीदवार सवर्ण मतदाताओं व कांग्रेस के मतदाताओं को भी अपने पक्ष में नहीं कर पाया, ऐसा इसलिये हुआ कि कांग्रेस का सवर्ण वोटर माकपा को अपना मत देने पर सहमत नहीं था, यही वोटर मौन रहा तथा बूथ तक नहीं पहुंचा।

भाजपा अपने समस्त कोर वोटर को मतदान केन्द्र तक लाने में काफी हद तक सफल रही, वहीं इंडिया गठबंधन से नाराज वोटर को भी अपने पक्ष में करने में भाजपा को कामयाबी मिली माकपा कांग्रेस के नेताओं को साथ नहीं ला पाई। माकपा को अपने कैडर एवं कुछ ग्रामीणों के भरोसे ही चुनाव प्रचार करना पड़ा। भाजपा ने अपने सभी नेताओं को साधकर एक जुटता के साथ चुनाव प्रचार किया और इसका लाभ भी भाजपा को मिला।

चुनाव प्रचार में माकपा के पक्ष में कोई कद्दावर नेता नहीं आया, यह बात भी माकपा उम्मीदवार के लिये घाटे का सौदा रही। इंडिया गठबंधन को स्थानीय नेताओं के भरोसे ही चुनाव प्रचार करना पड़ा, वहीं भाजपा उम्मीदवार के पक्ष में अमित शाह जैसे कद्दावर नेता का रोड शो हुआ। उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की सभा हुई तथा वहीं राज्य के मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा सहित प्रदेश स्तरीय नेताओं ने भी दौरे किए।

इंडिया गठबंधन के उम्मीदवार अमराराम के लक्ष्मणगढ़, दातारामगढ़ एवं धोद विधानसभा क्षेत्रों में आंशिक बढ़त के संकेत दिखाई दे रहे हैं। भाजपा के पक्ष में श्रीमाधोपुर, सीकर, खंडेला, चौमूं एवं नीम का थाना में बढ़त दिखाई दे रही है।

- **क्षेत्र के राजनैतिक जानकारों का कहना है कि, कांग्रेस के कोर वोटर्स को इंडिया गठबंधन के तहत यह सीट माकपा को देना पसंद नहीं आया और वो घर से ही नहीं निकला।**
- **इंडिया गठबंधन के प्रत्याशी अमराराम के समर्थक बेहद मुखर तो नज़र आए पर उनकी मुखरता मतदाता को पोलिंग बूथ तक नहीं ला पाई।**
- **इसके विपरीत भाजपा के कार्यकर्ताओं ने बूथ स्तर पर सक्रियता दिखाई और वे अपने कोर वोटर को पोलिंग बूथ तक लाने में सफल रहे।**
- **भाजपा ने सीकर से सुमेधानंद सरस्वती को मैदान में उतारा है।**

झुंझुनूं से कांग्रेस प्रत्याशी बृजेन्द्र ओला की जीत के प्रबल आसार

बृजेन्द्र ओला क्षेत्र के राजनीतिक दिग्गज रहे स्व. शीशराम ओला के पुत्र हैं

झुंझुनूं, 26 अप्रेल। लोकसभा चुनाव के पहले दौर के मतदान में प्रदेश की जिन 12 संसदीय सीटों पर चुनाव सम्पन्न हुए उनमें झुंझुनूं लोकसभा सीट भी है, जहां से भाजपा के शुभकरण चौधरी और कांग्रेस से बृजेन्द्र ओला के बीच सीधा मुकाबला है।

झुंझुनूं लोकसभा में जिस प्रकार से वोटिंग हुई है उसके बाद से ही भाजपा और कांग्रेस की टेंशन बढ़ी हुई है क्योंकि परिणाम चौंकाने वाले आ सकते है। झुंझुनूं लोकसभा सीट पर इस बार कुल बीस लाख सतानवें हजार सात सौ बत्तीस मतदाता हैं, जिनमें पुरूष मतदाता दस लाख अस्सी हजार दो सौ निन्यानवें तथा महिला मतदाता नौ लाख अठ्यासी हजार दो सौ अट्ठाइस हैं। झुंझुनूं, लोकसभा में इस बार 52.29 प्रतिशत मतदान हुआ जो 2019 के लोकसभा चुनाव की तुलना में 9.82 फीसदी कम हैं। जानकारों की माने तो झुंझुनूं लोकसभा चुनाव में कम वोटिंग होने से भाजपा को झटका लग सकता है।

झुंझुनूं लोकसभा क्षेत्र में इस बार कांग्रेस ने विधायक बृजेंद्र ओला को मैदान में उतार कर भाजपा के सामने मजबूत चुनौती पेश की हैं। भाजपा ने यहां से मौजूदा सांसद नरेन्द्र कुमार का टिकट काटकर उदयपुरवाटी के पूर्व विधायक शुभकरण चौधरी को मैदान में उतारा है। भाजपा प्रत्याशी शुभकरण चौधरी अब तक चार बार विधानसभा का चुनाव लड़ चुके हैं, पर सिर्फ एक बार वर्ष 2013 में उदयपुरवाटी से विधायक रहे हैं और एक बार भूमि विकास बैंक के चेयरमैन रह चुके हैं। कांग्रेस के बृजेंद्र ओला लगातार चौथी बार झुंझुनूं से विधायक हैं, इसके साथ ही प्रदेश की कांग्रेस सरकार में मंत्री भी रह चुके हैं और झुंझुनूं जिले की राजनीति के पुरोधा माने जाने वाले पद्म श्री स्वर्गीय शीशराम ओला के पुत्र हैं। कांग्रेस में अंदरूनी रूप से देखा जाए तो बृजेंद्र ओला को लेकर किसी भी प्रकार की खिलाफत भी नज़र नही आई।

झुंझुनूं में इस बार भाजपा में अंतर्कलह भी दिखाई दे रही है। जानकारों की माने तो भाजपा के कुछ पदाधिकारी कांग्रेस को अंदर ही अंदर सपोर्ट भी कर रहें है ताकि झुंझुनूं में बृजेन्द्र ओला जीत जाएं झुंझुनूं की विधानसभा सीट खाली तो उपचुनाव में उन्हें मौका मिल सके।

भाजपा प्रत्याशी शुभकरण चौधरी की बात करें तो झुंझुनूं लोकसभा क्षेत्र में कुछ जातियों विशेषकर राजपूत समाज और सैनी समाज में उनके खिलाफ आक्रोश भी देखने को मिल रहा है जो कि भाजपा की मूल वोट बैंक भी मानी जाती है तथा जाट समाज भी बंटा हुआ नज़र आ रहा है। वर्तमान में झुंझुनूं लोकसभा क्षेत्र की आठ विधानसभा सीटों में सिर्फ दो ही विधायक भाजपा के हैं, बाकी 6 विधानसभा सीटों में कांग्रेस के विधायक हैं, इससे भी लोकसभा चुनाव में कांग्रेस का प्रदर्शन मजबूत दिखाई पड़ रहा है। झुंझुनूं लोकसभा चुनाव में भारतीय जनता पार्टी को सिर्फ मोदी के नाम का ही सहारा है क्योंकि लगातार पिछले दो बार से यहां पर भाजपा के सांसद चुनाव जीत चुके हैं, लेकिन उन्होंने अपने कार्यकाल में कोई विशेष उपलब्धि हासिल नहीं की, इससे लोगों में भाजपा के प्रति नाराजगी दिखाई दे रही हैं।

- **बृजेन्द्र ओला चार बार झुंझुनूं से विधायक रहे हैं, वहीं उनके मुकाबले भाजपा के प्रत्याशी शुभकरण चौधरी हल्के माने जा रहे हैं, वे सिर्फ एक बार उदयपुरवाटी से विधायक और एक बार भूमि विकास बैंक में चेयरमैन रहे हैं।**
- **भाजपा में शुभकरण चौधरी को लेकर भारी अर्तकलह भी है। कहा जा रहा है कि, क्षेत्र के भाजपा नेता चाहते हैं कि, बृजेन्द्र ओला जीतें ताकि झुंझुनूं विधानसभा सीट पर उपचुनाव का रास्ता साफ हो जाए।**
- **कांग्रेस में बृजेन्द्र ओला की उम्मीदवारी के प्रति कोई अतर्विरोध नहीं है।**

इज़रायल ने गाजा पट्टी में फिर गोलीबारी शुरु की

गाजा, 28 अप्रैल (वार्ता) इज़रायली वायु सेना (आईडीएफ) ने पिछले दिनों गाजा पट्टी में फिलिस्तीनी हमास आंदोलन के रॉकेट लॉन्चरों सहित दर्जनों ठिकानों पर हमला किया और फिलिस्तीनी क्षेत्र में अज्ञात संख्या में कट्टरपंथियों को नष्ट कर दिया।

आई.डी.एफ. ने रविवार को यह जानकारी दी। बयान में कहा गया, पिछले दिन, आई.डी.एफ. के लड़ाकू विमानों और अतिरिक्त विमानों ने आतंकवादी बुनियादी ढांचे, प्रक्षेपण स्थलों, सशस्त्र आतंकवादियों तथा अवलोकन चौकियों सहित दर्जनों आतंकी ठिकानों पर हमला किया। इसके अलावा, इज़रायली नौसेना के सैनिकों ने भी हमास के ठिकानों पर हमला किया और मध्य गाजा पट्टी में आई.डी.एफ. जमीनी सैनिकों की सहायता करने का काम किया।

अमेठी पर 1981 का इतिहास दोहरायेगी कांग्रेस?

नई दिल्ली, 28 अप्रेल। कांग्रेसी अमेठी से राहुल गांधी के चुनाव लड़ने का दावा कर रहे हैं। यहां नामांकन शुरू हो चुका है। पर, अब तक कांग्रेस ने उम्मीदवार के नाम का ऐलान नहीं किया है। ऐसे में माना जा रहा है कि, पार्टी वर्ष 1981 के उपचुनाव का इतिहास दोहराने वाली है। उस वक्त कांग्रेस ने नामांकन शुरू होने के बाद प्रत्याशी उतारा था।

अब तक राहुल गांधी के चुनाव लड़ने के सिर्फ दावे हैं, जबकि कांग्रेस के मुकाबिल खड़ी भाजपा किसी असमंजस में नहीं है। उसने काफी पहले ही स्थितियां साफ कर दी थीं। स्मृति जूबिन इरानी चुनाव मैदान में डटी हुई हैं।

कांग्रेस जिलाध्यक्ष प्रदीप सिंघल दावा करते हैं कि राहुल गांधी ही अमेठी से चुनाव लड़ेंगे। कांग्रेस का उम्मीदवार घोषित नहीं होने की चर्चा पर पुराने वरिष्ठ कांग्रेसी महेंद्र तिवारी कहते हैं, ऐसा पहली बार नहीं है जब नामांकन शुरू होने पर भी पार्टी का प्रत्याशी मैदान में नहीं है।

इससे पहले 1981 में ऐसा हो चुका है। तब के चुनाव में कांग्रेस ने राजीव गांधी के नाम की घोषणा नामांकन शुरू होने के बाद की थी। जिस दिन राजीव उम्मीदवार घोषित हुए, उसी दिन उन्होंने नामांकन किया था।

अमेठी सीट पर सस्पैंस अंतिम समय तक बरकरार रहने वाला है। कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे के पाले में चली गई। खड़गे तो सबसे ज्यादा सस्पेंस बनाकर चल रहे हैं, कह रहे हैं कि नामांकन की तारीख से पहले सभी को नाम पता चल जाएंगे।

अब नाम फाइनल नहीं हुआ, ये हर कोई जान चुका है, लेकिन यहां समझने की कोशिश करते हैं वो चुनौतियां जिनकी वजह से अभी तक कांग्रेस असमंजस से बाहर नहीं निकल पा रही है। कहने को राहुल और प्रियंका कांग्रेस के लिए सबसे बड़े चेहरे हैं, लेकिन फिर भी दोनों के सामने पहाड़ जैसी चुनौती है। ऐसी ही 4 चुनौतियों के बारे में यहां आपको बताते हैं।

रायबरेली कांग्रेस की परंपरागत सीट रही है, यहां पर गांधी परिवार का वर्चस्व पिछले कई सालों से बना हुआ है। लेकिन प्रधानमंत्री मोदी के उदय के साथ ही रायबरेली में कांग्रेस की पकड़ कमजोर होती चली गई है। वोट शेयर के मामले में देश की सबसे पुरानी पार्टी अब रायबरेली में कमजोर होती दिख रही है, आंकड़े इस बात की पूरी तरह गवाही दे रहे हैं। 2009 में जब यूपीए की दूसरी बार सरकार बनी थी, तब रायबरेली में सोनिया गांधी को 72.20 वोट मिले थे, उस समय भाजपा का वोट शेयर मात्र 3.80 प्रतिशत था। लेकिन 5 साल बाद यानी कि 2014 में जब मोदी लहर ने सारे रिकॉर्ड ध्वस्त कर दिए, रायबरेली में भी उसका कुछ असर देखने को मिला।

कांग्रेस का वोट शेयर 72.20 प्रतिशत से गिरकर 63.80 पर आ गया, वहीं भाजपा को 21.10 वोट मिल गए। 2019 के लोकसभा चुनाव आते-आते कांग्रेस की स्थिति रायबरेली में और ज्यादा कमजोर हो गई, सोनिया गांधी ने कहने के लिए अपनी वो सीट बचा ली, लेकिन वहां पर उनका वोट शेयर सिर्फ 55.80 फीसदी रह गया, भाजपा का वोट प्रतिशत 38.40 तक पहुंच गया।

- **नामांकन शुरु होने के आखिरी मौके पर कांग्रेस ने राजीव गांधी के अमेठी से चुनाव लड़ने की घोषणा की थी, इस बार राहुल की उम्मीदवारी की घोषणा भी कुछ इसी तरह हो सकती है।**

नाव से 600 करोड़ रु. की ड्रग्स जब्त

अहमदाबाद, 28 अप्रेल। भारतीय तटरक्षक बल ने गुजरात तट से एक पाकिस्तानी नाव से 600 करोड़ रुपये की 86 किलोग्राम ड्रग्स जब्त की है। भारतीय तटरक्षक बल, एंटी टैररिस्ट सैल (एटीएस) और नारकोटिक्स कंट्रोल ब्यूरो (एनसीबी) ने संयुक्त रूप से इस ऑपरेशन को अंजाम दिया। नाव से 14 लोगों को गिरफ्तार किया गया है। अरब सागर में यह ऑपरेशन रात भर गुजरात आतंकवाद विरोधी दस्ते (ए.टी.एस.) और नारकोटिक्स कंट्रोल ब्यूरो (एन.सी.बी.) के समन्वय से चलाया गया।

हालांकि, तटरक्षक बल ने अभी तक यह खुलासा नहीं किया है कि, पाकिस्तानी नाव से कौन सी ड्रग्स बरामद की गई है। इस ऑपरेशन को अंजाम देने के लिए तटरक्षक जहाजों और विमानों को तैनात किया गया था। ऑपरेशन में आईसीजी जहाज राजरतन भी शामिल हुआ। जहाज की स्पेशल टीम संदिग्ध नाव पर चढ़ गई और बड़ी मात्रा में ड्रग्स की मौजूदगी की पुष्टि की। पाकिस्तानी नाव को उसके 14 सदस्यीय चालक दल के साथ पकड़ लिया गया।

पूर्व प्र.मंत्री देवगौड़ा के पोते ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

वहीं, जनता दल (सेक्युलर) नेता और पूर्व सी.एम. एच.डी. कुमारस्वामी द्वारा मामले में शामिल होने के लगाए गए अप्रत्यक्ष आरोप पर शिवकुमार ने कहा, "उन्हें मेरा नाम सामने लाने दीजिए। मैं उन्हें बेनकाब कर दूंगा। क्या वह इस तरह की बात करके महिलाओं के खिलाफ यौन उत्पीड़न को उचित ठहरा रहे हैं?" उन्होंने आगे कहा, "मुझे तब नहीं पता था कि, कुमारस्वामी द्वारा प्रदर्शित पेन ड्राइव में क्या था। अब मुझे पता है कि, उसमें क्या है। अब यह स्पष्ट है। मीडिया को कुमारस्वामी से पूछना चाहिए कि, अब जब हसन नेताओं पर यौन उत्पीड़न के आरोप हैं तो पेन ड्राइव में क्या है।" भाजपा ने प्रज्वल रेवन्ना मामले से दूरी बना ली है। राज्य में भाजपा और जे.डी.एस. का लोकसभा चुनाव के लिए गठबंधन है। कांग्रेस सरकार द्वारा मामले की जांच के लिए एस.आई.टी. के गठन की घोषणा के एक दिन बाद, भाजपा की राज्य यूनिट के मुख्य प्रवक्ता एस प्रकाश ने कहा, "एक पार्टी के रूप में हमें वीडियो से कोई लेना-देना नहीं है और न ही हमें प्रज्वल रेवन्ना से जुड़े कथित सेक्स स्कैंडल की राज्य सरकार द्वारा घोषित एस.आई.टी. जांच पर कोई टिप्पणी करनी है।" भाजपा के एक अन्य प्रवक्ता डॉ. नरेंद्र रंगप्पा से जब अश्लील वीडियो पर उनकी राय मांगी गई तो उन्होंने बस इतना कहा, "कोई टिप्पणी नहीं करनी। भाजपा के सूत्रों के अनुसार, पार्टी ने कथित सेक्स टेप मामले पर आधिकारिक तौर पर प्रतिक्रिया नहीं देने का फैसला किया है क्योंकि राज्य में उसके कई वरिष्ठ नेता इस मामले में चुप्पी साधे हुए हैं। भाजपा के एक नेता ने नाम न छापने की शर्त पर कहा कि, पार्टी का कथित सेक्स टेप से कोई लेना-देना नहीं है और वह इस समय कोई प्रतिक्रिया नहीं देगी, क्योंकि उसने ऐसे मामले से दूरी बनाए रखने का फैसला किया है जो शर्मिंदगी के रूप में सामने आया है।

'आर.एस.एस. ने ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

कहा कि, संघ परिवार ने कुछ समूहों को आरक्षण देने का कभी विरोध नहीं किया है। संघ का मानना है कि, आरक्षण तब तक दिया जाना चाहिए जब तक कि, इसकी जरूरत है। आर.एस.एस. प्रमुख भागवत ने पिछले साल नागपुर में कहा था कि, जब तक समाज में भेदभाव है तब तक आरक्षण दिया जाना चाहिए।

उन्होंने कहा था कि, भेदभाव समाज में व्याप्त है, भले ही यह दिखाई न देता हो।

बता दें कि आरएसएस, भाजपा का विचारधारा का मार्गदर्शक है। 2014 और 2019 के लोकसभा चुनावों में क्रमशः 282 सीटें और 303 सीटें जीतने के बाद, भाजपा इस चुनाव में लगातार तीसरी बार बहुमत हासिल करने का लक्ष्य लेकर चल रही है।

'चुनाव आयोग...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

और प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को अरविंद केजरीवाल और आम आदमी पार्टी से डर लगता है इसका सबूत उन्होंने देश के सामने रख दिया है। आतिशी ने कहा कि, यह सब सिर्फ़ तानाशाही सरकार में होता है जहां विपक्ष के नेताओं को जेल में डाल दिया जाता है, विपक्षी पार्टियों को प्रचार करने से रोक दिया जाता है। और आज भाजपा के एक और राजनीतिक हथियार, चुनाव आयोग ने इसे साबित कर दिया है। उन्होंने कहा, चुनाव आयोग ने एक पत्र के माध्यम से आम आदमी पार्टी के कैंपेन गीत पर रोक लगा दी है। यह भारत के इतिहास में पहली बार होगा जब किसी पार्टी के कैंपेन गीत पर चुनाव आयोग ने रोक लगा दी होगी। जब भाजपा ई.डी. और सी.बी.आई. का प्रयोग करके आचार संहिता के दौरान विपक्ष के नेताओं को जेल में डालती है तो चुनाव आयोग को कोई आपत्ति नहीं होती है लेकिन आम आदमी पार्टी इसे गाने का रूप दे देती है तो चुनाव आयोग को बहुत आपत्ति हो जाती है। 'आप' नेता ने कहा कि, भाजपा तानाशाही करें वह सही है लेकिन उस तानाशाही के बारे में कोई प्रचार करे तो वह ग़लत है। 'आप' कैंपेन गीत में कहीं पर भी भाजपा का नाम नहीं है लेकिन चुनाव आयोग को लगता है कि अगर आप तानाशाही की बात करते हैं तो यह सत्ता में बैठी पार्टी की आलोचना है।

उत्तराखण्ड ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

सप्लाई किये जाने की सूचना मिली। जिस पर थानाध्यक्ष ने अपने स्तर पर तत्काल अलग-अलग टीमें गठित की। जिसने मुखबिर की सूचना पर, चैकिंग के दौरान, नंदा की चौकी, बिधोली रोड से तीन अभियुक्तों को एल.एस.डी. के 2058 ब्लॉटस, 6 ग्राम अवैध हेरोइन तथा इलैक्ट्रॉनिक मिनी तराजू के साथ गिरफ्तार किया गया। साथ ही, तस्करी में प्रयुक्त दो वाहनों को भी सीज़ किया गया। सिंह ने बताया कि, गिरफ्तार इन नशा तस्करों की पहचान रजत भाटिया , शिवम अरोड़ा , और कृष गिरोटी पुत्र प्रवीण गिरोटी, निवासी मकान नंबर 11सी, ईदगाह, चकराता रोड, थाना कैंट, देहरादून के रूप में हुई है।

दिल्ली प्रदेश ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

परिस्थितियों के बीच वह पद पर बने नहीं रह सकते हैं।

गौरतलब है कि, लवली 15 साल तक दिल्ली में रही शीला दीक्षित सरकार में शिक्षा तथा पर्यटन जैसे मंत्रालयों की जिम्मेदारी निभा चुके हैं। वह 2017 में नगर निगम चुनाव से पहले भाजपा में शामिल हुए, लेकिन एक साल के भीतर ही पार्टी में लौट आये। कांग्रेस में घर वापसी करते हुए लवली ने भाजपा के साथ खुद को वैचारिक रूप से मिसफिट बताया था।

'कर्नाटक में कांग्रेस पार्टी अंतर्कलह से जूझ रही है'

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा, अब वह दिन दूर नहीं जब कांग्रेस पार्टी के विभिन्न गुटों में चल रही आंतरिक लड़ाई सड़कों पर आ जाएगी

दावणगेरे (कर्नाटक), 28 अप्रैल (वार्ता) प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने रविवार को यहां कांग्रेस पर हमला बोला और कहा कि, कर्नाटक में कांग्रेस पार्टी अंतर्कलह से जूझ रही है।

मोदी ने कांग्रेस के विभिन्न गुटों के बीच आंतरिक कलह के बारे में लोगों को आगाह करते हुए कहा कि जल्द ही यह झगड़ा सार्वजनिक हो जाएगा और प्रत्येक समूह संभावित चुनावी हार के लिए दूसरे को दोषी ठहराएगा।

उन्होंने कहा, "अब वह दिन दूर नहीं जब कांग्रेस पार्टी के विभिन्न गुटों में चल रही आंतरिक लड़ाई सड़कों पर आ जाएगी। सभी गुट हार के लिए एक-दूसरे को जिम्मेदार ठहराते नजर आएंगे।"

उन्होंने दावा किया कि दिल्ली में पार्टी के महत्वपूर्ण लाभ हासिल करने की संभावना कम है। उन्होंने दावणगेरे में देखे गए भारी जन समर्थन का हवाला देते हुए संकेत दिया कि, कर्नाटक के मतदाता कांग्रेस को उसकी कथित कमियों के लिए जिम्मेदार ठहराएंगे।

उन्होंने कहा, "इस बार उनकी (कांग्रेस की) दिल्ली में खाता खोलने की संभावना खत्म हो गई है। दावणगेरे में यह भारी जनसमर्थन दिखाता है कि कर्नाटक की जनता कांग्रेस को उसके पापों की सजा देगी।"

मोदी ने पांच वर्षों में अपने सहयोगियों के बीच प्रधानमंत्री पद को घुमाने के इंडिया समूह के प्रस्ताव की व्यवहार्यता और लाभों पर भी सवाल उठाया। उन्होंने राष्ट्रीय शासन पर ऐसी योजना के संभावित प्रभावों के बारे में चिंता जताई और सवाल उठाया कि क्या यह वास्तव में दीर्घकालिक रूप से देश के हितों की सेवा करेगा।

उन्होंने कहा, "मैंने सुना है कि, इंडिया समूह एक नया फॉर्मूला लेकर आया है। पांच साल में सभी सहयोगियों के किसी एक नेता को एक-एक साल के लिए प्रधानमंत्री बनाया जाएगा। यानी एक साल में एक प्रधानमंत्री, दूसरे साल में दूसरा प्रधानमंत्री, तीसरे साल में तीसरा प्रधानमंत्री बनाया जाएगा।ऐसे में क्या देश को फायदा होगा, क्या आपको या आपके बच्चों को फायदा होगा?

इस दौरान उन्होंने कर्नाटक में भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) सरकार के दृष्टिकोण और राज्य में कांग्रेस प्रशासन के दृष्टिकोण की तुलना की।

उन्होंने 2047 तक विकसित भारत के लक्ष्य को प्राप्त करने के उद्देश्य के साथ निरंतर प्रयासों के लिए भाजपा की प्रतिबद्धता पर प्रकाश डाला और कांग्रेस पर कथित निराशाजनक कार्य संस्कृति के साथ कर्नाटक की प्रगति को बाधित करने का आरोप लगाया।

- **मोदी ने पांच वर्षों में अपने सहयोगियों के बीच प्रधानमंत्री पद को घुमाने (रोटेशनल प्रधानमंत्री) के इंडिया समूह के प्रस्ताव की व्यवहार्यता और लाभों पर भी सवाल उठाया।**

मोदी ने उच्चतम न्यायालय की हालिया फटकार का हवाला देते हुए इलेक्ट्रॉनिक वोटिंग मशीनों (ई.वी.एम.) के बारे में निराधार अफवाहें फैलाने की कांग्रेस पार्टी की कथित कोशिशों की भी निंदा की। उन्होंने इन कार्रवाइयों को राष्ट्र के लोकतांत्रिक ढांचे के लिए हानिकारक बताया और भारत की चुनावी प्रक्रियाओं की अखंडता को बनाए रखने के महत्व को रेखांकित किया। मोदी ने यहां एक विशाल रैली को संबोधित करते हुए कहा, हुबली के एक कॉलेज परिसर में हमारी बेटी नेहा के साथ जो हुआ, उसने पूरे देश को हिलाकर रख दिया। उसका परिवार कार्रवाई की मांग करता रहा, लेकिन कांग्रेस सरकार पर तुष्टीकरण का दबाव हावी रहा।

उन्होंने कांग्रेस पर राष्ट्रीय सुरक्षा चिंताओं की अनदेखी करने और चुनावी उद्देश्यों के लिए प्रतिबंधित संगठन पॉपुलर फ्रंट ऑफ इंडिया (पीएफआई) के साथ जुड़ने का आरोप लगाया। उन्होंने बेंगलुरु के एक कैफे में बम विस्फोट की घटना के बाद उचित कार्रवाई करने में कांग्रेस की कथित विफलता का हवाला देते हुए सुरक्षा मुद्दों से निपटने में गंभीरता की कमी की ओर संकेत दिया।

प्रधानमंत्री ने कांग्रेस पर केवल चुनावी लाभ के लिए पीएफआई जैसे राष्ट्र-विरोधी संगठन का बचाव करने का आरोप लगाया, विशेष रूप से केरल के वायनाड निर्वाचन क्षेत्र में जहां से राहुल गांधी चुनाव लड़ रहे हैं। उन्होंने कहा, जब बेंगलुरु के एक कैफे में बम विस्फोट हुआ, तो कांग्रेस ने इसे गंभीरता से नहीं लिया। इतना ही नहीं, कांग्रेस ने वोट के लिए पीएफआई का इस्तेमाल किया, जो आतंकवाद को आश्रय देने वाला एक राष्ट्र विरोधी संगठन है और जिस पर मोदी सरकार द्वारा प्रतिबंध लगाया जा चुका है। कांग्रेस सिर्फ एक सीट, वायनाड में जीत हासिल करने के लिए ऐसे आतंकवादी संगठन पीएफआई का बचाव करने में लगी हुई है। मोदी ने उच्चतम न्यायालय के फैसले का हवाला देते हुए ई.वी.एम. और वी.वी.पैट. के मुद्दे पर कथित तौर पर नागरिकों को गुमराह करने के लिए इंडिया समूह पर कटाक्ष करते हुए कहा कि, न्यायालय ने उनकी आकांक्षाओं को चकनाचूर कर दिया।

सलेक्टिव मीडिया, कोटा के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक सोमेश शर्मा द्वारा वतन प्रेस पलायथा हाऊस, छत्रपति शिवाजी रोड, कोटा से मुद्रित एवं प्रकाशित। संपादक-राजेश शर्मा आर.एन.आई. नं. 28446/75, जयपुर कार्यालय: सुधर्मा एम.आई.रोड, जयपुर। फोन: 2372634, 4103333-34, फैक्स : 0141-2373513, बीकानेर कार्यालय : कुम्भाना हाऊस, हनुमान हत्था, बीकानेर। फोन: 2200660, फैक्स 0151-2527371, उदयपुर कार्यालय: आयड मैन रोड आयड, उदयपुर। फोन: 2413092, फैक्स : 0294-2410146, अजमेर कार्यालय: राष्ट्रदूत भवन, चुंगी नाका के पास, अजमेर। फोन: 2627612, फैक्स:0145-2624665 जालोर कार्यालय :- जी 1/63, इन्डस्ट्रीयल एरिया, फेस प्रथम, जालोर। फोन226422,226423, फैक्स: 02973-226424 हिण्डौनसिटी कार्यालय :- जी -1-201, रीको औद्योगिक क्षेत्र, हिण्डौनसिटी। फोन: 230200, 230400, फैक्स: 07469-230600 चूरू कार्यालय : एच-150, रीको औद्योगिक क्षेत्र, चूरू, फोन : 256906, 256907, फैक्स: 01562-256908